भोला पासवान शास्त्री

जन्म	:	1914 ।
निधन	:	10 सितंबर 1984 ।
जन्म-स्थान	:	बैरगाछी, जिला-पूर्णिया, बिहार ।
पिता	:	धूसर पासवान ।
शिक्षा	:	बिहार विद्यापीठ, पटना एवं काशी विद्यापीठ, वाराणसी से 1940 में स्नातक ।
कार्यवृत्त	:	छात्र जीवन से स्वाधीनता आंदोलन और राजनीति में सक्रिय । 1942 के राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी, 21 माह का कठोर कारावास । 1946 में बिहार प्रदेश काँग्रेस कमिटी के सदस्य । 1952 के आम चुनाव में धमदाहा-कोढ़ा निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित और डॉ० श्रीकृष्ण सिंह के मंत्रिमंडल में शामिल । 1957, 1962, 1967 के चुनावों में विधायक बने । मार्च 1968 से जनवरी 1972 तक की अवधि में तीन बार बिहार के मुख्यमंत्री बने । 1972 में राज्यसभा के सदस्य चुने गए और फरवरी 73 में केंद्रीय मंत्री बने । अप्रैल 1976 में पुनः राज्यसभा के सदस्य चुने गए और 1982 तक संसद सदस्य के रूप में अपनी सेवाएँ दीं ।
संपादन	:	पूर्णिया से प्रकाशित हिंदी साप्ताहिक पत्रिका 'राष्ट्र संदेश' का संपादन । पटना के हिंदी दैनिक 'दैनिक राष्ट्रवाणी' एवं कोलकाता के दैनिक पत्र 'लोकमान्य' के संपादक मंडल में सदस्य ।
कृति	:	'वियतनाम की यात्रा' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से 1983 में प्रकाशित, अन्य लेख, टिप्पणियाँ आदि अब तक अप्रकाशित ।

भोला पासवान शास्त्री बिहार के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, प्रबुद्ध पत्रकार एवं राजनेता थे । राजनीतिक हलकों में उन्हें आज भी बड़े आदर एवं सम्मान से स्मरण किया जाता है । बिहार के प्रबुद्ध नागरिकों, राजनीतिकर्मियों एवं बुजुर्ग पत्रकारों के बीच अपनी सादगी, लोकनिष्ठा, देशभक्ति, पारदर्शी ईमानदारी एवं विचारशीलता के लिए वे दुर्लभ उदाहरण के रूप में याद किए जाते हैं । भोला पासवान शास्त्री सिद्धांतों और मूल्यों की राजनीति करनेवाले तपे-तपाए राजनेता थे । कोई भी प्रलोभन उन्हें अपने मूल्यों और आदर्शों से डिगा नहीं सकता था । अपने राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में बिहार के एक पिछड़े हुए सुदूर अंचल के वंचित वर्ग से उठकर राज्य एवं देश के ऊँचे राजनीतिक पदों तक पहुँचनेवाले शास्त्री जी अपनी बौद्धिक-नैतिक योग्यता और व्यक्तिगत गुणों के बल पर आगे बढ़ते गए थे । वे व्यक्ति, जाति या समुदाय

विशेष की राजनीति नहीं करते थे । वे संपूर्ण समाज एवं उसकी मुख्यधारा की राजनीति करते थे । आर्थिक-सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समाज में जो भी पिछड़े दिखाई देते थे, उनके प्रति सजग दायित्वबोध बराबर उनमें बना रहा । उनके हितों के लिए वे निरंतर सचेष्ट रहे और बड़ा-से-बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहे ।

भोला पासवान शास्त्री को अंतरराष्ट्रीय राजनीति की गहरी समझ थी । भारतीय परंपरा के प्रति उनके भीतर गहरा अनुराग भाव था । लोकतंत्र में उनकी गहरी निष्ठा थी । वे मानवतावादी आदर्शों पर टिकी हुई सामाजिक बराबरी और सद्‌भाव के स्वप्न को साकार होते देखना चाहते थे । उनकी वियतनाम यात्रा संबंधी पुस्तक 'वियतनाम की यात्रा' से जिससे एक अंश यहाँ प्रस्तुत है, ये बातें प्रमाणित होती हैं ।

अपनी राष्ट्रीय अस्मिता और स्वतंत्रता के लिए लंबा अथक संघर्ष करनेवाले देश वियतनाम के प्रति तथा उसके महान नेता हो-ची-मीन्ह के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान भाव था । ऐसे विनम्र, संवेदनशील और जिज्ञासु नेता का यह यात्रा-वृत्त अनेक अर्थों में प्रेरणास्पद है ।

◆ ◆ ◆

"यात्रा जितनी बाहरी होती है उतनी ही भीतरी भी । यात्रा का विवरण जितना स्थूल भू-विस्तार से संबद्ध होता है उतना ही सूक्ष्म मानसिक भूगोल से भी । 'टूरिस्ट गाइड' के सहारे अनेक व्यक्ति एक ही यात्रा कर सकते हैं; यात्रा-संस्मरण के सहारे की गई प्रत्येक पाठकीय यात्रा भी उतनी ही विशिष्ट होती है जितनी लेखक की यात्रा रही । और प्रत्येक के लिए संस्मरण-लेखक के मानस में प्रवेश करना आवश्यक होता है । यही इस तरह के यात्रा-संस्मरणों की रोचकता का आधार हो सकता है ।

नक्शे में मैं अब भी देखता हूँ । वास्तव में जितनी यात्राएँ स्थूल पैरों से करता हूँ, उस से ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूँ । लोग कहते हैं कि मैंने अपने जीवन का कुछ नहीं बनाया, मगर मैं बहुत प्रसन्न हूँ, और किसी से ईर्ष्या नहीं करता । आप भी अगर इतने खुश हों तो ठीक–शायद आप पहले से मेरा नुस्खा जानते हैं–नहीं तो मेरी आप को सलाह है, "जनाब, अपना बोरिया-बिस्तर समेटिए और जरा चलते-फिरते नजर आइए ।" यह आप का अपमान नहीं है, एक जीवन दर्शन का निचोड़ है । 'रमता राम' इसीलिए कहते हैं कि जो रमता नहीं, वह राम नहीं । टिकना तो मौत है ।"

(अरे यायावर रहेगा याद ?)

–अज्ञेय

मुझे 251 नंबर का कमरा मिला । वह तीसरी मंजिल पर था । लिफ्ट द्वारा सामान कमरे में पहुँचा दिया गया । बड़ी थकावट थी । कमरा वातानुकूलित था । काफी ठंढा । आते ही बिछावन पर पड़ रहा । बड़ी गहरी नींद सोया । सवेरे नौ बजे आँख खुली । बिछावन पर आज का 'बैंकाक पोस्ट' रखा था । उसे एक बार सरसरी नजर से देखा । इस बीच सुरजीत ने जल्दी से तैयार होकर होटल के स्वागत कक्ष में पहुँचने के लिए फोन किया । दस-ग्यारह बजे एयरपोर्ट पर पहुँचना आवश्यक था ।

हम लोग बैंकाक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे आ गए । सामान उतारा गया । तब तक हमें लाउंज में बैठाया गया । विमान प्रतीक्षा कर रहा था । आज हम लोग हानोई के लिए प्रस्थान कर सकेंगे । मुझे खुशी हो रही थी । सब ठीक-ठाक हो गया । दोनों दूतावास के लोग विदाई-स्वागत के लिए तैयार बैठे थे । घोषणा हुई । हम लोग एक विशेष रास्ते से हांग-खोंग वियतनाम विमान के पास लाए गए । वियतनामी भाषा में 'हांग' का अर्थ मार्ग और 'खोंग' का अर्थ हवा होता है । अंग्रेजी में इसको 'एयर वियतनाम' कहेंगे ।

हम लोग एक-एक करके विमान के भीतर आ गए । विमान हम लोगों को लेकर बैंकाक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से वियतनाम की राजधानी हानोई के लिए उड़ा । थोड़ी देर बैंकाक शहर के ऊपर मंडराते हुए विमान अपनी मंजिल की ओर चल पड़ा । मैंने एक बार विमान से बैंकाक को फिर से देखा । इसके बाद वह नजर से ओझल हो गया । आसमान में कुहासा छाया हुआ था । इसलिए धरती की चीजें बहुत कम दिखाई पड़ रही थीं । जहाँ कुहासा घना नहीं होता था, वहाँ कभी कोई गाँव, नदी, खेत, खलिहान और जंगल दिखाई देते । लगभग डेढ़ घंटे की उड़ान के बाद अचानक एक बड़ी नदी दिखाई पड़ी । काफी बड़ी नदी मालूम पड़ी । श्री पार्थसारथी ने बताया कि यह 'मैकांग' नदी है । नाम सुनकर लगा जैसे वर्षों से मैं इस नदी को जानता हूँ । जब वियतनाम अमेरिका से लड़ रहा था उस समय न मालूम कितनी बार इस नदी का नाम दुनियाभर के समाचारपत्रों में आया करता था । लगा जैसे इस महानदी के साथ मेरा बड़ा गहरा भावनात्मक संबंध है । जब तक 'मैकांग' मेरी नजर से ओझल नहीं हो गई, मैं उसे देखता रहा । एक अज्ञात आध्यात्मिक तृप्ति का अपूर्व अनुभव हुआ मुझे । यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं है कि वहाँ मैकांग नदी महागंगा के नाम से मशहूर है । तिब्बत से निकलती है और लाओस, कंबोडिया में बहती चली जाती है । इस तरह देखते-देखते विमान वेंचियन हवाई अड्डे पहुँचा और केवल बीस मिनट तक रुका । वेंचियन लाओस का अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है । लगभग सभी यात्री यहाँ उतरे । कैंटीन में बड़ी मुश्किल से चावल की बनी पाव रोटी और चाय मिली । इस क्षेत्र में प्रायः चावल की बनी पाव रोटी मिलती है ।

विमान उड़ने का समय हो गया । घोषणा हुई । सभी यांत्री विमान के अंदर आ गए और अपनी-अपनी जगह पर जा बैठे । वेंचियन से हानोई पहुँचने में कुल डेढ़ घंटे लगे । जिस हवाई अड्डे पर विमान उतरा, उसका नाम 'जिया लाम' है । विमान द्वारा हानोई आने के लिए यही

अंतर्देशीय हवाई अड्डा सबसे नजदीक है । ज्योंही हांग-खोंग 'जिया लाम' हवाई अड्डे पर उतरा, वियतनामी अफसर कहिए या वियतनामी पीपुल्स पार्टी के कार्यकर्ता कहिए, बड़ी तेजी से विमान के अंदर आकर हम लोगों में से प्रत्येक से मिले । दूसरों ने गाइड और दुभाषिया का काम शुरू कर दिया । हम लोगों ने विमान से उतरने के बाद ज्योंही वियतनाम की भूमि का पहली बार स्पर्श किया, 'वियतनामी कमेटी ऑफ सोलिडिरेटी एंड फ्रेंडशिप विद् दी पीपुल्स ऑफ ऑल कंट्रीज' के पदाधिकारियों और उनके सहयोगियों ने गुलदस्ता भेंट करके स्वागत किया । हम लोगों के आगमन से वे बड़े प्रसन्न दिखे ।

विमान से थोड़ी ही दूर पर हम लोगों के लिए मोटरगाड़ी खड़ी थी । भारतीय प्रतिनिधि मंडल के प्रत्येक सदस्य के व्यवहार के लिए एक-एक मोटरगाड़ी की व्यवस्था थी । प्रत्येक के साथ 'वियतनाम कमेटी ऑफ सोलिडिरेटी एंड फ्रेंडशिप विद् दी पीपुल्स ऑफ ऑल कंट्रीज' का एक वरीय सदस्य और दुभाषिए का प्रबंध था । मोटरगाड़ी बड़ी थी । पूछने पर बताया गया कि ये गाड़ियाँ सोवियत रूस की बनी हुई थीं । अब हम लोग हानोई शहर की ओर चल पड़े । सड़कें साधारणतया अच्छी हैं । शहर में प्रवेश करने से पहले रेड रीवर पार किया । यह बड़ी नदी है । वियतनाम की एक मशहूर नदी । नदी पर लंबा पुल है । बीच से रेलगाड़ी आती-जाती है और दोनों बाजू सड़क है जिस पर मोटर, बस, ट्रक आदि और पैदल यात्री आते-जाते हैं । इसी रेड रीवर के किनारे वियतनाम की राजधानी हानोई बसा है । मुझे बताया गया कि 1982 ई० तक हानोई नगर की आयु नौ सौ वर्ष हो जाएगी ।

शहर में प्रवेश करते समय हानोई लोकोमोटिव रोड और हानोई रेलवे जंक्शन देखा । उसी समय एक रेलगाड़ी हाईफोंग से यात्रियों को लेकर हानोई जंक्शन पहुँच रही थी । डिब्बों में यात्री भरे थे । रास्ते में सड़कों के किनारे मकानों, बाजारों और हानोई नगर निवासियों को आते-जाते देखा ।

अब हम लोग अतिथिशाला के पास आ गए थे । यह अतिथिशाला औपनिवेशिक काल में बनी थी । अतिथिशाला से थोड़ी दूर पहले हम लोग मोटर से उतर गए और सड़क के दोनों किनारे रंग-बिरंगे वेश में बालक-बालिकाएँ, जवान और वृद्ध जो स्वागत के लिए खड़े थे, उनसे मिले । सबके हाथों में गुलदस्ता था और अपनी मातृभाषा में गाना गाकर वे हमलोगों का स्वागत करते हुए 'भारत और वियतनाम की मित्रता दृढ़ हो' के नारे भी लगा रहे थे । बड़े स्नेह और अपनत्व के साथ हम लोग एक-दूसरे से मिले । फिर थोड़ी देर बाद वहाँ से जुलूस के रूप में हम नई बनी राजकीय अतिथिशाला में पहुँचे । यहीं हम लोगों के रहने का प्रबंध था । यहाँ पहुँचने पर हमलोग एक बड़े होटल में बैठाए गए । यात्रा की थकावट दूर करने के लिए हमें सुगंधित गरम रूमाल हाथ-मुँह पोछने के लिए दिए गए । साथ-साथ चाय भी दी गई । मगर बिना दूध की । वह चाय मुझे एकदम अच्छी नहीं लगती । फिर भी एक-दो घूँट पी ही लेता था । वहाँ इसी तरह की चाय पीने की प्रथा है । मुझे तो वह चाय कुटकी चिरायता जैसी लगती ।

4. 'जिंदगी का हर कदम मंजिल है । इस मंजिल तक पहुँचने से पहले साँस रुक सकती है ।' इस कथन का क्या अभिप्राय है ।
5. वियतनामी भाषा में 'हांग खोंग' और 'हुअ सेन' का क्या अर्थ है ?
6. लेखक को ऐसा क्यों लगता है कि मैकांग नदी के साथ उसका गहरा भावनात्मक संबंध है ।
7. हानोई साइकिलों का शहर है । हम इस बात से क्या सीख सकते हैं ?
8. लेखक ने हो-ची-मीन्ह के घर का वर्णन किस प्रकार किया है ? इससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है ।

पाठ के आस-पास

1. वियतनाम के स्वाधीनता संग्राम से जुड़ी हुई तस्वीरें उपलब्ध करें और उसके स्वाधीनता संग्राम का इतिहास बताते हुए हो-ची-मीन्ह के योगदान पर एक लेख लिखें ।
2. विश्व मानचित्र पर वियतनाम, बैंकाक, हानोई, मैकांग, तिब्बत, लाओस, कंबोडिया को दर्शाएँ ।
3. हानोई का अंकन लेखक ने साफ-सुथरे शहर के रूप में किया है । आप अपने शहर या गाँव का वर्णन किस रूप में करेंगे । विस्तार से लिखें ।
4. हो-ची-मीन्ह और महात्मा गाँधी पर एक तुलनात्मक लेख लिखें ।
5. भोला पासवान शास्त्री उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ एवं विचारक थे । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने शिक्षक से चर्चा करें एवं उनके जन्म दिवस पर कार्यक्रम आयोजित करें तथा उन पर एक पर्चा तैयार कर पढ़ें ।

भाषा की बात

1. लेखक ने हो-ची-मीन्ह के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया है ? पाठ से उन विशेषणों को चुनें ।
2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग निर्णय करें –
   निधि, स्केच, प्राण, सुधि, तस्वीर, विभूति, संपत्ति, संरक्षण, दाढ़ी
3. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय निर्दिष्ट करें –
   राजनीतिक, विदेशी, राष्ट्रीयता, जीवंतता, नागरिक, अंतरराष्ट्रीयता, वातानुकूलित, औपनिवेशिक
4. इन शब्दों के उपसर्ग निर्दिष्ट करें –
   उन्नति, परिलक्षित, प्रतिकृति, अपूर्व, स्वागत
5. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ –
   (क) दिन बीतते गए ।
   (ख) हो सकता है दो-चार वर्ष और पहले की हो ।
   (ग) इसमें संदेह नहीं कि उनका जीवन कभी नहीं सूखने वाले प्रेरणा-स्रोत के समान बना रहेगा ।
   (घ) वे कौन हैं, कहाँ के हैं और क्या हैं, जानने की सुधि भी नहीं रही ।
6. पाठ से प्रत्येक कारक के कुछ उदाहरण चुन कर लिखें ।
7. पाठ से विभिन्न कारकों के परसर्ग रहित एवं परसर्ग सहित उदाहरण चुनें और कारक रूप स्पष्ट करें ।

शब्द निधि

स्मृति	:	याद
अन्यमनस्क भाव	:	अनमने भाव से
सव्यसाची	:	बायाँ-दायाँ दोनों हाथ से निशाना साधनेवाला, अर्जुन के लिए रूढ़
फबना	:	शोभित होना
परिलक्षित	:	प्रकट दिखाई पड़ना
निधि	:	खजाना
गुलदस्ता	:	पुष्पगुच्छ, फूलों का गुच्छा
औपनिवेशिक काल	:	जब वियतनाम पर दूसरे देश का शासन था
तेजस्वी	:	तेजपूर्ण
मैजेस्टिक	:	जादुई
सद्य:स्नात	:	तुरंत स्नान किया हुआ
सुधि	:	स्मृति, ध्यान
हरफों	:	अक्षरों
अंत:सलिला	:	अंदर-ही-अंदर प्रवाहित होनेवाली नदी
विभूति	:	ऐश्वर्यमय व्यक्ति
विश्व-विश्रुत	:	विश्व विख्यात
पार्थिव	:	लौकिक
दुभाषिया	:	ऐसा व्यक्ति जो दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच बातचीत कराता है ।
शिकंजा	:	कैद, पकड़
पैगाम	:	संदेश